सफारीएक्सप्रेस

APRIL-MAY-JUNE-2024

निदेशक की कलम से

इटावा सफारी पार्क, इटावा द्वारा इस त्रैमासिक न्यूज लेटर के द्वितीय अंक के माध्यम से माह अप्रैल, मई व जून 2024 में सफारी पार्क में हुई मुख्य गतिविधियों को संक्षेप में प्रस्तुत किया जा रहा है। यह सम्पूर्ण अंक सफारी पार्क एवं वन्यजीव संरक्षण को समर्पित है जिसमें सफारी पार्क में पाए जाने वाले वन्यजीवों एवं उनसे सम्बन्धित जानकारी उपलब्ध करायी जा रही है। इटावा सफारी पार्क द्वारा इन तीन माह में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन किया गया।

हमें हर्ष है कि इस न्यूज लेटर के माध्यम से सफारी पार्क के सामान्य क्रियाकलापों के साथ-साथ वन्यप्राणियों के संरक्षण हेतु इटावा सफारी पार्क प्रबन्धन द्वारा की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों से आपका परिचय कराया जा रहा है।

(डा. अनिल कुमार पटेल)
भा.व.से.
निदेशक
इटावा सफारी पार्क, इटावा

Address :
Director, Etawah Safari Park
Etawah Gwalior Road,
Etawah - 206001
Phone : +91-7839435094
Email : dirlsetawah@gmail.com

Etawah Safari Park remains closed for tourists on Monday

FACEBOOK INSTAGRAM TWITTER

कुछ पल का विश्राम : भविष्य की प्रत्याशा

बी.एन. सिंह प्रा.व.से.(से.)
बायोलॉजिस्ट

''**मैं वृद्ध नही विराट हूँ।**'' शीर्षक के साथ जिस सेमल वृक्ष का छायाचित्र विश्व वानिकी दिवस 2024 के उपलक्ष्य में प्रसारण हेतु उ0प्र0वन विभाग के प्रचार–प्रसार शाखा को, इटावा सफारी पार्क, इटावा की ओर से भेजा गया था, वास्तव में वह वृक्ष दिनांक 23.03.2024 को अपने छत्र में दुर्लभ गिद्ध प्रजाति ''**हिमालयन ग्रीफन**'' को आश्रय प्रदान कर अपने को विराट सिद्ध करने में सफल रहा। सूर्यास्त के साथ–साथ इस वृक्ष की मजबूत शाखाओं पर विशालकाय चौदह गिद्धों ने डेरा जमाया और रात्रि विश्राम किया। प्रातः 06:00 बजे तक वे सभी उसी एक वृक्ष पर विश्राम करते पाये गये। जैसे–जैसे भगवान भास्कर ने अपने आलोक का विस्तारण प्रारम्भ किया और इटावा सफारी क्षेत्र में कर्मचारियों का आवागमन तेज हुआ, उन्होंने भी अपना स्थान बदलना प्रारम्भ किया। कुछ पास के दूसरे ऊँचे सेमल वृक्ष (लॉयन सफारी के अन्दर) पर तो कुछ विद्युत आपूर्ति हेतु लगाये गये ऊँचे खम्बों पर जा बैठे, जो पूरे दिन सफारी कर्मियों एवं पर्यटकों के बीच कौतुहल का विषय बने रहें।

मैं इस क्षेत्र में वर्ष 1989 से 1992 तक पूर्व में भी रहा और उस अवधि में इटावा जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में यथा– इटावा–औरेया मार्ग, भर्थना–विधूना मार्ग तथा इटावा–ग्वालियर मार्ग के किनारे यमुना पार–कामेत गॉव के आस–पास के क्षेत्रों में मृत मवेशियों के शवों का भक्षण करते 5–6 की संख्या में देशी गिद्ध (लॉग विल्ड वल्चर), चमरगिद्ध (व्हाईट बैक वल्चर) तथा कभी–कभी एक–दो राज गिद्ध (किंग वल्चर) दिख जाते थे। कालान्तर में उनका दिखना भी दुर्लभ हो गया। किन्तु पूर्व में भी हिमालयन ग्रीफन वल्चर के इस क्षेत्र में देखे जाने का कोई दृष्टान्त मेरे संज्ञान में नहीं आया है। इटावा सफारी पार्क, इटावा में प्रथम बार दिनांक 23.11.2018 को एक हिमालयन ग्रीफन वल्चर घायलावस्था में लाया गया था, जो सम्भवतः दिल्ली–हावड़ा रेल मार्ग के किनारे किसी ट्रेन की चपेट में आ जाने के कारण घायल हो गया था। इटावा सफारी प्रबन्धन एवं यहॉ के पशुचिकित्सकों के अथक प्रयास से उसे बचाया जा सका एवं अत्यन्त स्वस्थ अवस्था में दिनांक 09.12.2022 को उसे कानपुर प्राणि उद्यान, कानपुर भेज दिया गया। सम्भवतः यह प्रथम दृष्टांत था, जब हिमालयन ग्रीफन वल्चर की उपस्थिति इस क्षेत्र में दर्ज

की गयी थी। इस प्रकार की बड़ी प्रजातियों को आश्रय प्रदान करने हेतु विशालकाय मजबूत वृक्षों का होना और आस–पास के क्षेत्र में सतत् आहार सामग्री का उपलब्ध होना आवश्यक है, तभी इनका प्रवास एवं संरक्षण संभव हो सकेगा। सफारी क्षेत्र में प्राकृतिक रूप से उग एवं बढ़ रहे सेमल प्रजाति के वृक्ष भविष्य हेतु एक उम्मीद जगा रहे हैं।

हिमालयन गिद्ध (हिमालयन ग्रीफन : जिप्स हिमालयेन्सिस) : भारतीय उपमहाद्वीप में पाये जाने वाले गिद्ध प्रजातियों में सबसे बड़े आकार (115–125 से0मी0) का यह गिद्ध मुख्यतया हिमालयी क्षेत्र में 600 मी0 से 5000 मी0 तक की ऊँचाई वाले क्षेत्रों में निवास करता है। शीतकाल में समतल मैदानी क्षेत्रों में भी भोजन की तलाश मे आ जाता है। अपने समकक्षीय यूरेशियाई गिद्ध (जिप्स फल्बस : 95–105 से0मी0) की तुलना में इसका शरीर बड़ा, अधिक चौड़ा एवं अधिक लम्बी पूँछ वाला होता है। धूमिल पीत–श्वेत पर–पंखनी व शरीर, गहरे रंग के उड़ान पंख व पूँछ से स्पष्ट रूप से अलग दिखते है तथा पीतवर्ण का झालरदार गुलुबंद (मफ़्फल), अधरभाग में स्पष्ट धारियों की कमी। गहरे नखयुक्त गुलाबी पैर व पंजे तथा पीताभ चोच व सेयर तरूण। अवस्था में भूरे रोमयुक्त गुलुबन्द, चोच एवं सेयर प्रारम्भिक रूप में काले, गहरा भूरा शरीर तथा सुस्पष्ट पीत धारियों युक्त ऊपरी पर–पंखनी (पर–पंखनी का रंग लगभग उड़ान पिच्छो से मेल खाता हुआ) एवं पृष्ठ भाग व पुट्ठा भी गहरे रंग का। अधरभाग अधिक घनी धारियोंयुक्त तथा अग्र पीठ व कंधे पर भी धारियॉ होती है। यह गिद्ध गुजरात, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश में भ्रमणशील (वैगरेण्ट), हिमाचल प्रदेश, जम्मू–कश्मीर तथा उत्तराखंड में सामान्य निवासी नहीं (नाट कॉमन रेजीडेन्ट) तथा पंजाब व राजस्थान में सामान्य शीतकालीन यात्री नही। (नॉट कॉमन विन्टर विजिटर) श्रेणी में सूचीबद्ध है।

इस गिद्ध प्रजाति को संरक्षण के दृष्टि से ''इण्टरनेशन यूनियन फार कन्जरवेशन ऑफ नेचर'' द्वारा अपने रेड डाटा बुक में संकटग्रस्त प्रजाति (नियर थ्रीटेण्ड स्पीशिज) के रूप में चिन्हित किया गया है। वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 यथा संशोधित 2022 द्वारा इसे अनुसूची–1 में रखा गया है। वैसे तो भारतीय प्रायद्वीप में पाये जाने वाले सभी नौ गिद्ध प्रजातियों–देशी गिद्ध, चमरगिद्ध, राजगिद्ध, जटायु, पतलचोंच गिद्ध, हिमालयी गिद्ध, यूरेशियाई गिद्ध, काला गिद्ध तथा सफेद गिद्ध (गोबर गिद्ध) को वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 यथा संशोधित–2022 द्वारा संरक्षण प्राप्त है। इस गिद्ध प्रजाति के सम्बन्ध में कुछ रोचक तथ्य निम्नप्रकार है :

आहार–मुख्य रूप से मृत पशुओं का मॉस। यह एक सामाजिक पक्षी है, अतः बड़े–बड़े झुण्डो में पाया जाता है, किन्तु आहार ग्रहण करते समय अपने हिस्से के आहार को बचाने के लिये और अपने प्रतिद्वन्दी को दूर भगाने के लिये जोर से आवाज निकालता है। कभी–कभी इसे चीड़ के पत्तों को खाते हुये भी देखा गया है, जो एक असामान्य व्यवहार है।

प्रजनन–प्रजनन काल जनवरी माह से प्रारम्भ हो जाता है, जो मार्च के अन्त तक चलता है। मादा एक बार में एक ही अण्डा (87 से 104 मि0मी0 ऊँचाई तथा 65–74 चौड़ाई अर्थात् औसतन 95 मिमीX70 मि0मी के आकार का) देती है। इन्क्यूबेशन (उष्मायन) अवधि 54–58 दिन का होता है तथा बच्चे लगभग 6–7 माह माता–पिता के साथ रहते है।

शारीरिक भाग – 06 से 12.5 किग्रा औसतन 09 कि0ग्रा0

पंख विस्तार – 2.56 से 3.10 मी0

जीवनकाल – 40 से 50 वर्ष तक।

अन्य गिद्ध प्रजातियों की तरह यह प्रजाति भी विषाक्त पदार्थो के प्रतिसंवेदनशील है तथा विशेष रूप से डिक्लोफेनेक जो पालतु मवेशियों के शव में विद्यमान रहता है, इनके लिये हानिकर सिद्ध हो रहा है।

विश्वा की कहानी–मंजुल की जुबानी

मंजुल कुमार

दिनांक 11.03.2024 को सुबह–सुबह लायन सफारी के एनीमल हाउस न0–2 में एक नये सदस्य का आगमन हुआ। पूर्व में इस हाउस में इटावा सफारी पार्क के केवल दो वृद्ध शेर रह रहे थे। अब नए सदस्य ''विश्वा'' के आने से इनकी संख्या 3 हो गयी। वृद्ध शेरों में एक नर शेर गीगो तथा दूसरी शेरनी जेसिका है जिनकी उम्र लगभग 15 वर्ष है। इनकी देखरेख मेरे द्वारा की जा रही है। मैं वर्ष 2015 से नियमित रूप से वन्यजीवों विशेषकर शेरों की देखभाल एक कीपर के रूप में कर रहा हूँ। प्रतिदिन शेरों की गतिविधियों को बहुत नजदीक से देखने का मौका मुझे मिलता है। उनकी दहाड़, एक दूसरे को देखकर उनकी भाव–भगिमाओं में बदलाव, भोजन देने से पूर्व उनकी गतिविधि, भोजन करते समय उनका आचार–व्यवहार इत्यादि देखदेख कर मैं बहुत ही खुश होता हूँ। प्रतिदिन उनके आचार व्यवहार में कुछ न कुछ नया देखने को मिलता है जिसकी वजह से मुझे उनके साथ समय व्यतीत करना अच्छा लगता है।

एनीमल हाउस न–2 का नया सदस्य ''विश्वा'' विश्व शेर दिवस के दिन पैदा हुआ है। शेर कान्हा एवं शेरनी जेनिफर का यह बच्चा है। माता जेनिफर की मृत्यु के बाद विश्वा अकेला हो गया था तथा ब्रीड़िग सेंटर के यूनिट नं0–2 में ही रह रहा था। वहां पर कार्यरत मेरा सहयोगी कीपर आसिफ अली मुझे बताता था कि जब भी कोई विश्वा के पास यूनिट नं0–2 में जाता था तो वह डरकर पार्टुरिशन चैम्बर में छुप जाता है तथा एक झरोखे से देखता रहता है और बाहर तब तक नहीं आता जब तक कि यूनिट नं0–2 के दरवाजे बन्द नहीं हो जाते हैं। यूनिट नं0–2 में अकेले रहने के कारण विश्वा का आचार व्यवहार बिल्कुल अलग था। निदेशक महोदय के निर्देश पर विश्वा को लॉयन सफारी के एनीमल हाउस नं0–2 में लाया गया है। यहाँ पर विश्वा को जेसिका शेरनी के बगल वाले सेल में रखा गया। पहले तो शेरनी जेसिका को देखकर विश्वा एक कोने में छुप रहा था तथा उसके पास नहीं आ रहा था परन्तु शेरनी जेसिका खिड़की के पास बैठकर उसे एक टक देख रही थी। पूरे दिन यही सिलसिला चलता रहा। शाम को सभी शेरों को भोजन (मीट) देकर मैं अपनी ड्यूटी से अपने आवास आ गया। अगले दिन सुबह जब मैं एनीमल हाउस में पहुँचा तो देखा कि शेरनी जेसिका एवं शेर विश्वा दोनों

खिड़की के पास बैठे है तथा एक दूसरे से मिलने के लिए खिड़की की सरिया से अपने पंजों को मिलाने का प्रयास कर रहे हैं। सम्भवतः रात्रि में एक दूसरे को वे अच्छी तरह से समझे गये होंगे। अब सुबह क्राल में खोलने पर दोनों विश्वा एवं जेसिका एक दूसरे के पास घण्टों बैठे रहते है तथा ऐसा लगता है कि दोनों एक दूसरे से कुछ बातें करते हैं। बात करें भी तो क्यों नहीं, आखिर शेरनी जेसिका रिश्ते में शेर विश्वा की नानी जो है। सम्भवतः नानी से अपनी मां की कहानी सुनकर शेर विश्वा शुरू के 2–3 दिन अपनी मां जेनिफर को याद कर भावुक हो रहा था। परन्तु धीरे–धीरे वह अपने को दृढ़ बना रहा है। वर्तमान में मां जेनिफर के इस दुनिया में नहीं होने पर भी नानी जेसिका का साथ मिलने से शेर विश्वा अपने नानी के घर उनसे कहानी सुन–सुनकर अच्छे से रह रहा है।

इटावा सफारी पार्क के गॉड फादर बब्बर शेर मनन की द्वितीय पुण्यतिथि

इटावा सफारी पार्क के गॉड फादर दिवंगत बब्बर शेर मनन की द्वितीय पुण्यतिथि दिनांक 13.06.2024 को मनायी गयी। इस मौके पर बब्बर शेर मनन के चित्र पर पुष्प अर्पित किए गए तथा सफारी पार्क प्रशासन द्वारा बब्बर शेर मनन की याद में एक वट वृक्ष का रोपण किया गया। मनन की पुण्यस्मृतियों यथा–बॉल, लॉग, पाइप, एवं पानी की कुण्डी का एक संग्राहलय की स्थापना की गयी तथा कार्यालय में स्थित सभागार को मनन सभागार के नाम पर अर्पित करते हुए उसकी स्मृति पर बनी फिल्म एवं यादों के संकलन को साझा किया गया।

विश्व कछुआ दिवस पर आयोजित कार्यक्रम

इटावा सफारी पार्क में दिनांक 23.05.2024 को विश्व कछुआ दिवस के अवसर पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके साथ ही एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। जिसमें इटावा जनपद के 13 विद्यालयों के लगभग 100 छात्र–छात्राओं ने प्रतिभाग किया गया।

लॉयन सफारी पार्क के द्वितीय क्षेत्र का विस्तार

प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वन्यजीव, उत्तर प्रदेश श्री संजय श्रीवास्तव द्वारा दिनांक 25.05.2024 लॉयन सफारी क्षेत्र के द्वितीय भाग का शुभारम्भ किया गया तथा झण्डी दिखाकर पर्यटक बस को सफारी क्षेत्र के लिए रवाना किया गया। लॉयन सफारी के द्वितीय भाग में अब पर्यटक इटावा सफारी के सबसे वृद्ध बब्बर शेर गीगो, जैसिका एवं हीर को देख सकेंगे।

इस त्रैमास में विशिष्टजनों का भ्रमण

- श्री मनीष अग्रवाल, आई.ए.एस., भुवनेश्वर, उड़ीसा।
- श्री टी. राजीव, आई.आर.एस., हैदराबाद, तेलंगाना।
- श्रीमती एन.एस. निशा, तमिलनाडू।
- श्री तेजवीर सिंह, सांसद राज्यसभा।
- नूर जोहरा खानम, कमिश्नर, मैंगलोर विकास प्राधिकरण।
- वासुदेव एन. सेट्टी, विशेष सचिव, गोवा।
- मा0 न्यायमूर्ति शमीम अहमद, इलाहाबाद उच्च न्यायालय।
- श्री पी.एम. स्कॉट, सदस्य (नदी प्रबंधन), केन्द्रीय जल आयोग, भारत सरकार।
- प्रो0 एस0सी0 तिवारी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।
- श्री मुकुल सिंघल, आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त)।

त्रैमास में नए सदस्यों का आगमन एवं वन्यजीवों का दूसरे प्राणि उद्यान में प्रस्थान

- 31 मई/01 जून को बब्बर शेरनी नीरजा द्वारा 04 शावकों को जन्म दिया गया। वर्तमान में 02 शावक स्वस्थ है।
- 04 जून को ललितपुर वन प्रभाग से एक मादा भालू को रेस्क्यू कर लाया गया।
- 07 जून को रांची वन प्रभाग, झारखंड से 02 नर व 02 मादा भालुओं को लाया गया।
- 24 मई को एक नर एवं एक मादा बब्बर शेर को गोरखपुर प्राणि उद्यान भेजा गया।

त्रैमास में रेस्क्यू कर लाए गए वन्यजीव

- 28 अप्रैल को बागपत वन प्रभाग से घायल अवस्था में विशेष उपचार हेतु नर तेन्दुआ रेस्क्यू कर लाया गया।

मुख्य सम्पादक : डा0 अनिल कुमार पटेल, भा0व0से0
सम्पादकीय टीम : डा0 विनय कुमार सिंह, प्रा0व0से0, श्री बी0एन0 सिंह, प्रा0व0से0 (से0नि0)
डिजायन : शशांक पटेल